Roll No

Total No. of Questions 5] [Total No. of Printed Pages 4

RA-25

B.A.B.Ed. III[rd] Semester

Examination, 2021-22

Elective Lit.-Hindi

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 60**

नोट :- सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिये गये हैं।

खण्ड - अ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न/अतिलघु उत्तरीय प्रश्न 4×1=4

1. सभी चार प्रश्नों के उत्तर अधिकतम एक वाक्य में लिखिए।

https://www.onlinebu.com

(i) रामदास किस कवि की कविता है ?

(ii) मुक्तिबोध का पूरा नाम क्या है ?

(iii) अभिनायक कविता के कवि कौन है ?

(iv) 'बंगल के दिन भर के सन्नाटे में' कविता के कवि कौन है ?

खण्ड 'ब'

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×5=20

2. टिप्पणी कीजिए (सभी रचनाकारों पर 100-150 शब्दों में टिप्पणी करें)

(i) रामधारी सिंह दिनकर

(ii) दुष्यंत कुमार

(iii) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(iv) गुप्तिल

(v) भवानी प्रसाद मिश्र

खण्ड 'स'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 9×2=18

3. नागार्जुन की कविताओं के आधार पर उनकी प्रगतिशील दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं को लिखिए।

4. मुक्तिबोध की काव्य-कला को सविस्तार समझाइए।

अथवा

अज्ञेय की कविताओं में अंतर्निहित व्यक्ति स्वातंत्र्य की अवधारणा को विश्लेषित कीजिए।

https://www.onlinebu.com

5. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। (किन्हीं तीन) 6×3=18

(क) जलता है यह जीवन पतंग
जीवन कितना ? अतिलघु क्षण
ये शलभ पुंज से कण-कण
तृष्णा वह अनलशिखा बन
दिखलाती रक्तिम यौवन
जलने की क्यों न उठे उमंग ?

(ख) दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि, पतंग भी जलता है हाँ ! दीपक भी जलता है।
सीस हिलाकर दीपक कहता -
'बन्धु' वृथा ही तू क्यों दहता ?
पर पतंग पड़कर ही रहता
कितनी विह्वलता है।

(ग) बेमालूम दर्रों के इलाके में
(सच्चाई के सुनहले तेज अक्सों के धुंधलके में)
मुहैया कर रहा लश्कर,
हमारी हार का बदला चुकाने आएगा
संकल्प-धर्मा चेतना का रक्त प्लावित स्वर
हमारे ही हृदय का गुप्त स्वर्णाक्षर
प्रकट होकर विकट हो जायेगा।।

https://www.onlinebu.com

(घ) क्या दख न सकती जजीरों का गहना
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश-राज का गहना
कोल्हू का चरक चूँ जीवन की तान
गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान ?
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआ।

(ङ) बावरे अहेरी रे
कुछ भी अवध्य नहीं तुझे, सब आखेट है :
एक बस मेरे मन-विवर में दुबकी कलौंस को
दुबकी ही छोड़कर क्या तू चला जाएगा ?
ले मैं खोल देता हूँ कपाट सारे

+++

https://www.onlinebu.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.onlinebu.com